IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन''

"Study of Guidance Requirements of higher secondary level students"

***Vikas Kumar, **Dr. Sanjay kumar**

*Rsearch Scholar, Department of Education, Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu - 333515, Rajasthan, India

**Research Guide, Department of Education, Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu - 333515, Rajasthan, India

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन करना है। विद्यार्थियों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का आकलन करने से अन्य विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में राजस्थान के झुन्झुनू जिले से 800 छात्रों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नही है। आँकड़ो के सकंलन हेतु निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का मापन – डॉ. जे. एस. ग्रेवाल द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली : उच्च माध्यमिक, छात्र, निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं, ग्रामीण, और शहरी क्षेत्र।

प्रस्तावना :

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में होते है इस अवस्था में ही छात्र–छात्राओं को चुनौतियों का सबसे अधिक सामना करना पड़ता है क्योंकि इस वक्त एक ओर जहाँ उचित शिक्षा व सही मार्गदर्शन उसके जीवन की धारा बदल कर आकाश की ऊँचाइयों तक ले जा सकती है, वही दूसरी ओर इसका अभाव उसे पतन के गर्त में भी डूबो सकता है। अतः आवश्यकता है उचित परिस्थितियों के निर्माण की। अतः शिक्षा ही इस समय में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण कर सकती है, जो विद्यार्थी को सहज एवं सरल बनायें और उसे सही मार्ग प्रशस्त करें।

किशोर बालक अपने भविष्य के निर्णय लेने में पूरी तरह सक्षम नहीं होते हैं क्योंकि उन्हें अपनी मानसिक योग्यता व क्षमता का पूर्ण रूप से ज्ञान नहीं होता है जिस कारण उच्च माध्यमिक स्तर पर विषयों के चुनाव में माता–पिता की इच्छा एवं दबाव की वजह से उनके द्वारा बताये गये विषयों को चुन लेते है तथा उनकी महत्वकांक्षाओं से प्रभावित होकर अपना भविष्य निर्धारित करते है। ऐसी स्थिति में जिन बच्चों की उन विषयों पर पकड़ अच्छी होती है, वे तो उसमें अपना भविष्य बना लेते है, परन्तु जो उन विषयों पर पकड़ नहीं बना पाते हैं, वे बेहतर उपलब्धि हासिल नहीं कर पाते है दूसरे शब्दों में उनकी मानसिक योग्यता व क्षमता को जाने बिना जो विषय उन्हें दिलाये गये थे, वे उनके लिए बाधक सिद्ध होते है तथा उनकी स्वयं की आकांक्षाऐं भी पूरी नहीं होती है और वे अपने आप को कभी भी सामाजिक, पारिवारिक व शैक्षिक वातावरण में समायोजित नहीं कर पाते है जिससे उनका विकास प्रभावित होता है।

वहीं दूसरी ओर वर्तमान में बच्चे दिवास्वप्न देखते हुए पूरी दुनियाँ को मुट्ठी में कर लेने के लिए आतुर हैं, कई बार बच्चे अपनी क्षमता को जानते हैं, परन्तु उनके अभिभावक अपनी महत्वकांक्षा इन बच्चों पर थोपते है। वर्तमान में अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों से वह प्राप्त करने को कहते है जो वे स्वयं प्राप्त नहीं कर सके। कम शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर, वकील आदि बनाना चाहते है, वही उच्च शिक्षित अभिभावक (डॉक्टर, इंजीनियर, आई. एस. एस., आई.पी.एस., वकील, जज आदि) अपने बच्चों को अपने जैसा बनाना चाहते है। यहाँ पर बच्चों की वास्तविक क्षमता पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

आज अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में पढ़ने के लिए भेजते है, घर पर ट्यूशन लगा देते हैं, जितना अधिक हो सकता है, उतनी सुविधाएँ प्रदान करते हैं। आज प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को हर क्षेत्र में शीर्ष पर देखना चाहते है, किन्तु वे यह भूल जाते है कि ऐसी क्षमता प्रत्येक बालक में नहीं होती, क्योकि प्रत्येक बालक की बुद्धिलब्धि और रूचि भिन्न–भिन्न होती है और उनकी रूचि और मानसिक योग्यता व क्षमता के आधार पर ही उनकी भावी जीवन के प्रति आकांक्षाएँ जुड़ी होती है। सांख्यिकीय दृष्टि से भी अधिकांश बच्चे औसत दर्जे के ही होते हैं। ऐसे में बच्चों के ऊपर अत्यधिक दबाव उनके अन्दर तनाव उत्पन्न करता है। अगर बच्चा कक्षा में प्रथम स्थान नहीं ला पाया तो घर में ही जो अभिभावक बच्चों को थोड़ा सा भी दर्द होने पर परेशान हो जाते है वे उसे इस स्थिति में मानसिक/शारीरिक यातना देना शुरू कर देते हैं। आज कोई बच्चा बचपन का अर्थ नहीं जानता, क्योंकि सुबह उठा तैयार हुआ, विद्यालय गया, लौटा तो ट्यूशन। फिर दोनों जगह के होमवर्क निपटाने में रात के 10–11 तो बज ही जाते हैं। आज के बच्चे मशीन हो गये है, उनसे अधिकतम शिक्षा की अपेक्षा की जाती है।

प्रस्तुत शोध कार्य निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं के प्रभाव की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसके माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकेगी कि एक विद्यार्थी की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाले सिद्धान्त कौन–कौन से है जिससे कि अन्य विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन, व्यावसायिक, व्यक्तिगत निर्देशन में वृद्धि करने तथा उत्तम आदतों के निर्माण हेतु इसका अध्ययन आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य लक्ष्य यह था कि उच्च माध्यमिक

स्तर के छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन करके अन्य सामान्य विद्यार्थियों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य प्रस्तुत कर सके।

समस्या कथन :–

''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन''

"Study of Guidance Requirements of higher secondary level students"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श :

समष्टि में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए राजस्थान के झुन्झुनू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के छात्रों को शामिल किया है। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श हेतु झुन्झुनू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् 800 छात्रों का न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। इसलिए शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चयन किया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं :

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं – डॉ. जे. एस. ग्रेवाल का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु झुन्झुनू जिले में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों (प्राचार्य/प्राचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवाया और उपकरण के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं की अनुसूचि का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात् इन उपकरण की जाँच अंकन योजना के अनुसार की गई। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या प्रस्तुत की गई है। परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु (N) मध्यमान, प्रमाप विचलन (SD) एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान (CR–Value), की गणना की गई।

परिकल्पना सं. 1 – उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका

मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

छात्र	N	M	SD	SED	D	df	C.R.
ग्रामीण	400	73.23	60.9	4.23	2.5	798	0.59
शहरी	400	75.73	58.8				

** 0.05 सार्थक स्तर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एव शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 73.23 व 75.73 है, तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 60.9 व 58.8 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि का अन्तर 4.23 तथा मध्यमानों का अन्तर 2.5 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.59 है जो कि 798 के स्वतन्त्रता के अंश हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से कम है। **अतः परिकल्पना 5 स्वीकृत होती है** अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रों के निर्देशन सम्बन्धी आवश्कताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

चूंकि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों का मध्यमान 73.23 तथा शहरी छात्रों का मध्यमान 75.73 से कम है। किन्तु यह अन्तर संयोगवश है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

ग्राफ

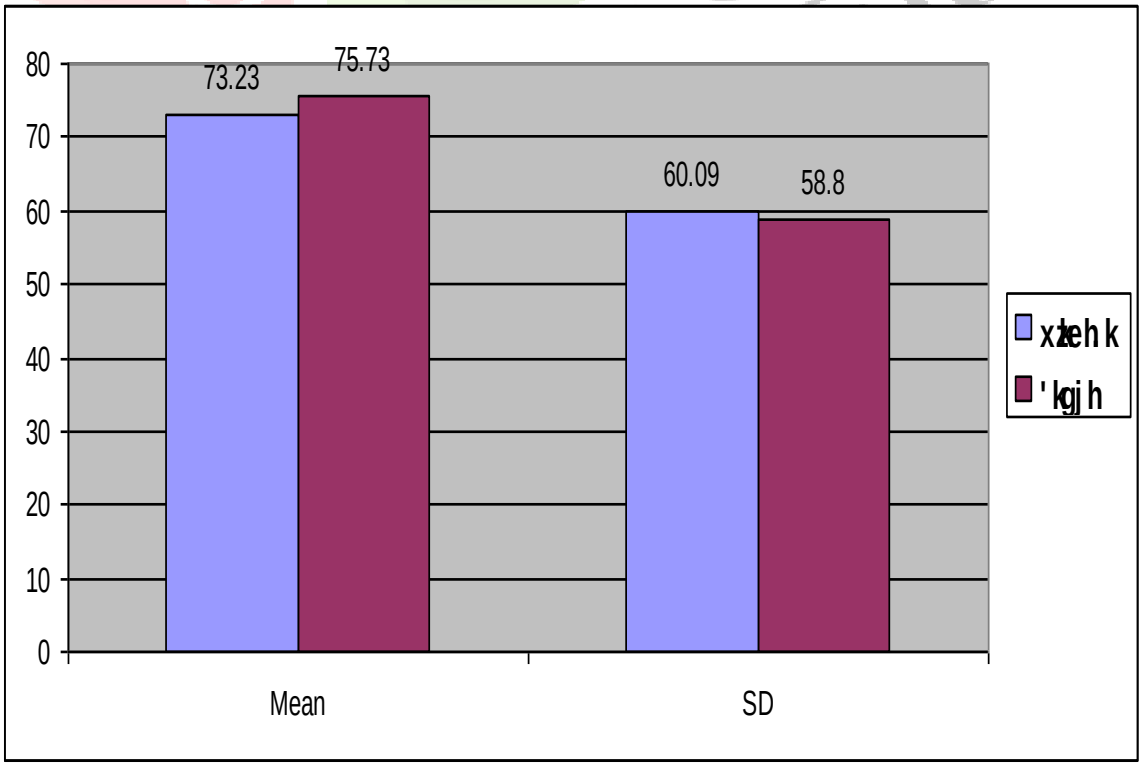

संदर्भ – ग्रन्थ

- चौहान, एस.एस. (1987), निर्देशन के सिद्धान्त, विकास पब्लिकेशन हाउस, जयपुर।
- **सिंह, आर. तथा उपाध्याय** : शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, 2008, पृ.सं. 1–19
- **स्वामी, शिव कुमार (1990)** : शैक्षिक निर्देशन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर पर रसायनशास्त्र में निष्पत्ति परीक्षण की रचना राजस्थान में शिक्षानुसंधान, सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएं/3, शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर, पृ.सं. 81
- **शर्मा, उषा (1991)** : नवोदय एवं सामान्य राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकता एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन राजस्थान में शिक्षानुसंधान, सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएं/2, शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर, पृ.सं. 213
- रायजादा, बी. एस. (1997), शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी, जयपुर 16–27
- भटनागर, एस. (2004), शिक्षा मनोविज्ञान तथा शिक्षण शास्त्र, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 142 –155
- अस्थाना, वी.एवं अस्थाना, एस. (2005), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 480–507